DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-7,
PERSONAL-DETERMINANTS OF AGGRESSION

LECTURE-35

PERSONAL DETERMINANTS OF AGGRESSION

आक्रामकता के वैयक्तिक निर्धारक

आक्रामकता के वैयक्तिक निर्धारक से तात्पर्य वैसे कारणों से होता है जो व्यक्ति के शीलगुण(TRAITS) ,चितवृति (TEMPERAMENT) आदि से सम्बंधित होते है और आक्रामक व्यवहार को उत्पन्न करते है |

ऐसे वैयक्तिक कारणों में निम्नांकित कारण प्रमुख है –

(I) टाईप ए व्यवहार पैटर्न – मनोवैज्ञानिकों ने टाईप ए व्यवहार तथा टाईप बी व्यवहार पैटर्न का अध्ययन

आक्रामकता से जोड़कर किया है |जैसा कि आप जानते है टाईप ए व्यवहार पैटर्न एक ऐसा व्यवहार पैटर्न है जिसमे व्यक्ति अधिक प्रतियोगिता का भाव दिखलाता है ,समय कि अत्यावश्यकता अधिक होती है तथा इनमे विद्वेष का मान भी तीव्र होता है | जिन व्यक्तिओं में ऐसे गुण नहीं होते है ,उसे टाईप बी व्यवहार पैटर्न कहा जाता है |कई शोधकर्ताओ जैसे बेरोन,रुस्सेल तथा आर्म्स (1985) कार्भर तथा ग्लास्क (1978) द्वारा किये गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि टाईप ए व्यवहार पैटर्न वाले व्यक्ति टाईप बी व्यवहार पैटर्न वाले व्यक्ति कि तुलना में आक्रामकता अधिक दिखाते है ऐसी आक्रामकता में व्यक्ति पीड़ित को कुछ न कुछ हानि जरुर पहुंचाता है परन्तु टाईप ए व्यवहार पैटर्न वाले व्यक्ति साधनात्मक आक्रामकता में पीड़ित को हानि पहुंचाने का मुख्य उद्देश्य व्यक्त में नहीं होता है बल्कि इसमें व्यक्ति कुछ अन्य लक्ष्य कड़े ढंग से व्यवहार करने पर प्रसंशा प्राप्त करना आदि दिखलाता है |

(II) विद्वेषी गुणारोपण पूर्वाग्रह – डोज़ एवं उनके सहयोगियों (1986) द्वारा किये गए अध्ययन से

स्पष्ट हुआ है कि जब व्यक्ति में विद्वेषी गुणारोपण पूर्वाग्रह होता है ,तो इससे उसमे आक्रामकता उत्पन्न होती है | बिद्वेशी गुणारोपण पूर्वाग्रह से तात्पर्य व्यक्ति कि ऐसी प्रवृति से होती है जिसके कारण वह दुसरो के व्यवहार में विद्वेषी इरादा या अभिप्रेरण उस परिस्थिति में निश्चित रूप से देखता है जब व्यवहार में स्पष्टतः होती है | जिन व्यक्तियों में ऐसी प्रवृति या पूर्वाग्रह अधिक होती है , वे शायद ही कभी दूसरो को शक का लाभ देता है और सीधे –सीधे यह मान लेता है कि उनके द्वारा जान-बुझकर ऐसा व्यवहार किया गया है , अतः उसका समुचित जवाब (अर्थात आक्रामक व्यवहार) देना उचित है |डोज़ तथा कोई (1987) द्वारा किये गए अध्ययन से इस तथ्य कि स्पष्ट रूप से संपुष्टि हुयी है |

(III) संवेदन जिज्ञासा –कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जिन्हें हमेशा कुछ नयी नयी तरह कि अनुभूतियों को प्राप्त करने में आनंद आता है |ऐसे व्यव्क्ति विशेष कर उन अनुभूतियों को प्राप्त करने में अधिक जिज्ञासा दिखलाते है जो उत्तेजक स्वरूप के होते है तथा जिन में कुछ जोखिम भी सम्मिलित होता है | ऐसे व्यक्ति

को समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा संवेदन जिज्ञासु तथा उस प्रक्रिया को संवेदन जिज्ञासा कि संज्ञा दिया है| समाज मनोविज्ञानिकों का मत है कि जिन व्यक्तियों में संवेदन जिज्ञासा अधिक होती है,वे आक्रामकता अधिक दिखलाते है |

जोअरमैन ,एंडरसन तथा स्ट्रेथमैन (2003) ने अपने अध्ययन में पाया है कि जिन व्यक्तियों में संवेदन जिज्ञासा कि प्रवृति अधिक होती है ,उनमे आक्रामकता से सम्बंधित निम्नांकित तीन तरह कि प्रवृतियाँ अधिक पायी जाती है –

1. ऐसे व्यक्ति आक्रामक-उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों के प्रति आकर्षित होते है और ऐसी परिस्थिति में उन्हें काफी आनंद आता है |
2. ऐसे व्यक्ति में क्रोध तथा ईर्ष्या अधिक होती है |
3. ऐसे व्यक्ति अपने द्वारा किये गए व्यवहार के तात्कालिक प्रभाव पर न कि विलंबित प्रभाव पर अधिक ध्यान देते है |

इन तीनो तरह कि प्रवृतियो का समग्र प्रभाव यह होता है कि व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों कि अपेक्षा दैहिक एवं शाब्दिक आक्रामकता अधिक होती है |

(IV) यौन विभिन्नता – आक्रामकता पर व्यक्ति के लिंग का भी प्रभाव पड़ता है | सामान्यतः पुरुषों द्वारा महिलाओं कि तुलना में अधिक आक्रामक व्यवहार दिखलाया गया है इस तथ्य कि पुष्टि कई लोगो ने जिसमे हर्रिस (1994) तथा बोगार्ड (1990) मुख्य है ,अपने अध्ययन से किया है | बाल्कर रिचार्डसन तथा ग्रीन (2000) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि पुरुष तथा महिला में आक्रामक व्यवहार को करने में यह अंतर पुरे जीवन काल तक बना रहता है |परन्तु अंतर का आकार निम्नांकित परिस्थिति के अनुरूप भिन्न होता है |

(a) जब परिस्थिति ऐसी होती है जिससे स्त्री तथा पुरुष में उत्तेजना उत्पन्न नहीं होता है तो ऐसी परिस्थिति में पुरुष स्त्री कि तुलना में अधिक आक्रामक व्यवहार करते है |परन्तु यदि परिस्थिति ऐसी है जिससे स्त्री तथा पुरुष दोनों में ही काफी अधिक उत्तेजना उत्पन्न होती है ,तो इसमें आक्रामकता के ख्याल से स्त्री तथा पुरुष में अंतर समाप्त हो जाता है |दुसरे शब्दों में ,स्त्रियाँ भी ऐसी परिस्थिति में पुरुषो के सामान आक्रामक व्यवहार दिखलाना प्रारंभ कर देती है |

(b) आक्रामक व्यवहार को करने में स्त्री तथा पुरुष में पाए जाने वाला अंतर का आकार तथा दिशा आक्रामकता के प्रकार से प्रभावित होता है |

(v) अवैयक्तिकता –अवैयक्तिकता एक ऐसी अवस्था होती है जिसमे व्यक्ति कि पहचान छिपी होती है | कुछ समाज मनोविज्ञान को जैसे जिवार्डो(1969) तथा डाइनर(1969) का मत है कि अवैयक्तिकता से व्यक्ति में आलोचना कम हो जाती है तथा नकारात्मक मूल्यांकन का डर समाप्त हो जाता है | परिणामस्वरूप ,व्यक्ति आवेगशील ,समाजविरोधी एवं आक्रामक व्यवहार अधिक करता है | प्रेनिटस-डून एवं रोजर्स (1980) द्वारा किये गए अध्ययन से भी इस तथ्य कि पुष्टि हुयी है | इस अध्ययन में प्रयोज्यों को प्रयोगकर्त्ता के सहयोगी को दो अवस्थाओं में विद्युताघात करना था - वैयक्तिकता कि अवस्था में तथा अवैयक्तिकता कि अवस्था में | वैयक्तिकता कि अवस्था में प्रयोज्य के नाम से बुलाया जाता था और विद्युताघात करते समय उसकि तीव्रता को प्रयोगकर्त्ता द्वारा देखा जाता था |अवैयक्तिकता कि अवस्था में प्रयोज्यों को नाम से ही नहीं पुकारा जाता था तथा विद्युताघात करते समय प्रयोगकर्त्ता उन्हीं पर विद्युताघात कि तीव्रता कि जवाबदेही देकर स्वयं वहां से हट जाते थे | परिणाम में देखा

गया कि अवैयक्तिकता कि अवस्था में प्रयोज्यों ने वैयक्तिकता कि अवस्था कि तुलना में 50% अधिक विद्युताघात किया |स्पष्ट है कि अवैयक्तिकता में व्यक्ति में आक्रामकता कि प्रवृति में वृद्धी होती है | अतः स्पष्ट हुआ कि कई वैयक्तिक निर्धारक है जो व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न करते है |